सच्ची होली मनाने की रीति

भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ के त्योहार, जैसे कि शिवरात्रि इत्यादि या तो ईश्वर के चरित्रों के साथ सम्बन्धित है या देवताओं के जीवन के साथ सम्बन्ध रखते हैं, जैसे कि दिवाली आदि। अत: भारत के त्योहारों का पूरा परिचय तभी हो सकता है जब कि परमात्मा के निराकार और साकार स्वरुप का, उसके अलौकिक चरित्रों के समय का और देवताई सृष्टि स्थापित करने की अलौकिक रीति का परिचय हो। भारतीय त्योहारों का परमात्मा और देवताओं के साथ जो सम्बन्ध है और उनके पीछे जो आध्यात्मिक रहस्य है, उनका बोध हुए बिना इन त्योहारों के मनाने का पूरा लाभ भी नहीं हो सकता। यही बात होली के विषय में भी कही जा सकती है। अत: भारतवासियों को होली के आध्यात्मिक महत्व को अवश्य जानना चाहिए।

गीता के भगवान ने गोप-गोपियों के साथ होली मनाई इस वृतांत के चित्र भारतवासी अपने घरों में प्रेम से लगाते हैं और स्वयं भी उस दृष्टि से हर वर्ष होली मनाना चाहते हैं। परन्तु गीता के निराकार भगवान, जिन्होंने साकार रूप धारण किया, कौन थे, उन्होंने गोप- गोपियों के साथ कब और कैसे होली मनाई, वह होली मानाने में क्या आनन्द समाया हुआ था यह मालूम न होने के कारण आज भारत वासी जिस तरह की होली मनाते हैं, जिस प्रकार रंगों पर लाखों रुपया खर्च करते हैं, उसका नक्शा तो हर एक भारतवासी के सामने है। वह तो मनुष्य जीवन की अनमोल घडियों को उच्छृंखलता वश व्यर्थ खोने और देश की तथा निजी पूंजी को मिट्टी में मिलाने के तुल्य हैं।

क्या गीता के भगवान ने ऐसी होली मनाई थी ?

विचार कीजिए कि भगवान का तो हर एक कृत्य अलौकिक चरित्रात्मक और आदर्शपूर्ण होता है। भगवान का तो हर एक कर्म बड़ा शिक्षाप्रद, कल्याणकारी, रमणीक, आकर्षक, प्यारा और सप्रयोजन होता है। तो आज जिस प्रकार लोग एक दूसरे के गले में जूतों का हार डालते, मिट्टी के तेल में रंग घोल घोलकर एक दूसरे का मुंह काला करते है, क्या यह सब होली खेलने की अलौकिक अथवा ईश्वरीय रीति कही जा सकती है ? होली के दिनों में एक दूसरे पर आवाजें कसना, बड़े छोटे का अदब गंवा देना, सभी दिव्य गुणों को भूलकर हुल्लढ़ मचाना और स्थान-स्थान पर दंगा करना, क्या यही आदि सनातन होली है जो गीता ज्ञान धारणा करने वाले गोप-गोपियों ने ज्ञान- स्वरूप, प्रेम- स्वरूप, सर्वगुण सम्पन्न, निराकार परमात्मा अथवा गीता के भगवान के साकार रूप से की थी ? या होली खेलने की वह रीति ही और थी ?

होली के दो पहलू

आज भारतवासी होली को दो तरह से मनाते हैं। होली के दिनों में एक तो परस्पर रंग खेलते है और दूसरे, अंतिम दिन, वे होलिका को जलाते हैं। इसलिए यथार्थ रीति से होली मनाने के लिए इन दोनों रिवाजों को जानना आवश्यक है।

होलियों में रंग

वास्तव में गीता के भगवान ने ज्ञान- गुलाल से अथवा विज्ञान (योग) केसर से ही सब गोप-गोपियों की आत्माओं को रंग डाला था, अथवा पवित्रता रूपी गुलाब- जल से ही उनके अंग-अंग को

शीतल कर दिया था। भगवान को तो हर एक कर्तव्य करना था ही ज्ञाननिष्ठ और दिव्यगुण सम्पन्न सृष्टि उत्पन्न करने के लिए। परन्तु बाद में जैसे उनकी रसीली ज्ञान मुरली (जिसके द्वारा गोप-गोपियों ने अतीन्द्रिय सुख पाया था, न कि इन्द्रिय सुख) को चित्रकारों ने चित्रों में रत्न जड़ित मुरली का रूप दे दिया, वैसे ही उनके ज्ञान- गुलाल और योग केसर (जिस अलौकिक रंग से ही भगवान ने गोप-गोपियों को आध्यात्म में रंग दिया था) की याद में भी आज लोग स्थूल रंग खेलते और स्थूल रीति से होली मानते हैं।

जबरदस्ती रंग लगाना

आज एक दूसरे को जबरदस्ती रंग लगाने की जो रिवाज है वह भी वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ लिए हुए हैं। आज होली के दिन यदि कोई मनुष्य घर का द्वार बन्द कर स्वयं को बाहर के रंग से छिपाता है, रंग डलवाने के लिए बाहर नहीं आता, तो होली खेलने वाले लोग उसे कहते हैं- अभी आप तो रंग से चिढ़ाते हैं। हम तो आप को जबरदस्ती रंग लगाकर ही रहेंगे। जिन लोगों को रंग लगा होता है वह दूसरों को भी रंग लगाने के लिये विवश करते हैं। वह कहते हैं अब तो समय ही रंग लगवाने और खुशियां मनाने का है।

इस प्रथा का, शुरू में जो आध्यात्म रूप था, वह इस प्रकार था धर्म सम्पन्न सतयुगीय देव सृष्टि स्थापन करने वाले गीता के भगवान ने जिन गोप-गोपियों को ज्ञान और योग के रंग में रंगा था, उन्हें ही उन्होंने आज्ञा की थी कि हे वत्सो जाओ अब दूसरों की चौली भी इस ज्ञान रंग से रंग दो। सारी सृष्टि में कोई भी मनुष्यात्मा इस रंग के छीटों से अछूती न रहे । श्रीमद्भगवत में भगवान की इस ज्ञान होली की दो तरह से उल्लेख मिलता है। एक स्थान पर तो यह लिखा है कि ब्रह्मा जी के द्वारा ज्ञान यज्ञ स्थापित कराके भगवान ने कहा कि इस ज्ञानयज्ञ से तुम दूसरों को भी देवता बनाकर वृद्धि को प्राप्त हो। दूसरे स्थान पर कहा है कि हे वत्स, मेरा यह गुह्य ज्ञान (रंग) मेरे भक्तों को सुनाओ (लगाओ)

आज स्थूल रंग लगाने के लिये जो जर्बदस्ती की जाती है उसको तो बहुत हानि होती है और परस्पर दंगे हो जाते हैं। परन्तु यदि इस होली को फिर अपने वास्तविक ज्ञानमय रूप में बदल दिया जाय जो होली का ही नहीं, भारत का ही नहीं, बल्कि संसार का चित्र-चरित्र एकदम बदल जाय।

मंगल- मिलन

होली के दिन, जान पहचान वाले लोग, आपस में मिलते, एक दूसरे पर रंग डालते और परस्पर छाती से लगते है। जो दो मनुष्य होली से पूर्ण लड़े हुए हो, वह भी होली के दिन एक दूसरे पर रंग डालकर खूब मिलते हैं। ऐसे मिलन को “मंगल मिलन” कहा जाता है। इसका अर्थ जनता यह लेती है कि इस मिलन के समय से लेकर दोनों मिलने वाले अपनी पिछली शत्रुता, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि को भूलकर परस्पर प्यार करने लगेंगे। परन्तु साधारण विचार की बात है। कि मन के भीतर की अशुद्ध वृत्तियां, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि आत्मा को ज्ञान में रंगे बिना तो मिट नहीं सकते। जब तक मनुष्यात्मा का कल्याणकारी परमपिता परमात्मा (शिव) से मिलन न हो तब तक आपस में भी “मंगल मिलन” नहीं हो सकता।

अत: वास्तव में ज्ञान और योग द्वारा ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि विकारों का सन्यास कराके, सब भारतवासीयों को सदा के लिए लड़ाई- झगड़ों से मुक्त कराके परस्पर आध्यात्म प्रेम से मंगल मिलन तो

गीता के भगवान ने ज्ञान गुलाब और विज्ञान केसर द्वारा ही करना सिखाया था। यही वास्तव में सच्ची होली थी। परन्तु आज उस शुभ चरित्र का भी बाह्य और स्थूल रूप ही अपनाया जाता है, जिसमें मिलने वाले परस्पर आंतरिक प्रेम से शून्य ही नहीं होते बल्कि अगले पिछले बदले निकालते। और, गीता के भगवान को तथा उसकी सच्ची होली को लोग यहां तक भूल गए हैं कि कहते हैं कि गीता के भगवान ने कुरु क्षेत्र के मैदान में युद्ध कराया था और उसकी बहुत ही पटरानियां थी! परन्तु ये सब झूठ-मूंठ ही, भारतवासियों ने, गीता के भगवान पर कलंक लगाये हैं।

होली का जलाना

होली के दिन अड़ोसी- पड़ोसी इकट्ठे होकर उपलो के एक बहुत बड़े ढेर के साथ होलीमनाई थी। उनकी मान्यता है कि प्रहलाद का पिता हिरण्यकश्यप और उसकी बहिन होलिका सतयुग में हुए। परन्तु वास्तविकता यह है कि न सतयुग में हिरण्यकश्यप जैसे दैत्य होते हैं और न ही द्वापर युग में भगवान के अवतरित होने की आवश्यकता होती है। बल्कि भगवान अर्थात ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर नाम से सूक्ष्म देवताओं को भी रचने वाला निराकार परमात्मा शिव (ज्योतिर्लिंगम) जो ही ब्रह्मा द्वारा सतयुगी देव- सृष्टि की स्थापना, शंकर द्वारा कलियुगी सृष्टि का विनाश और विष्णु द्वारा सतयुग और त्रैता की सृष्टि का पालन कराते हैं, अवतरित ही कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम समय ब्रह्मा के साकार साधारण, वृद्ध मनुष्य तन में, धर्म सम्पन्न सतयुगीय सृष्टि की पुन: स्थापनार्थ होते हैं। हां, जिस ब्रह्मा के तन में परमात्माा अवतरित होकर गीता ज्ञान देते हैं, उनका जन्म भविष्य सतयुगी देव- सृष्टि के आदि में कृष्ण के रूप में होता है।

अत: वास्तव में गीता का भगवान निराकार त्रिमूर्ति परमात्मा (ज्योर्तिलिंगम) शिव थे। उन्होंने ही ब्रह्मा (न कि कृष्ण) रूप द्वारा, संगम समय, गोप-गोपियों के साथ सच्ची होली मनाई थी, जो चरित्र कि ५००० वर्ष के पश्चात अब हूबहू पुनरावृत्त हो रहे हैं। ब्रह्मा तथा सरस्वती के रूपों द्वारा ही गीता के निराकार मगढेर (जिस पर वे होलिका को बैठा मानते हैं) को आग लगाते है। लोगों की मान्यता है कि इस दिन प्रहलाद (जो स्वयं को ईश्वर की सन्तान निश्चय करता था) को जलाने के लिए हिरण्यकश्यप (जो स्वयं को भगवान निश्चय करता था) की बहिन होलिका प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर आग के ढेर पर बैठी। उसको यह निश्चय था कि वह सुरक्षित ही बाहर निकल आयेंगी और प्रहलाद जल जायेगा। परन्तु हुआ इसके विपरीत ही। अर्थात्, होलिका जल गई और प्रहलाद बच निकला। इस खुशी में लोग आज तक होलिका जलाते आते हैं। परन्तु इस आध्यात्मिक रूपक के वास्तविक रहस्य को जीवन में नहीं लाते। यद्यपि होलिका जलाने की परम्परा इस तथ्य की याद दिलाती है कि एक अकेला बालक भी ईश्वर ही का एक मात्र सहारा लेने पर अनेक परिक्षाओं को पार करते हुए विजयी होता है और सुरक्षित रहता है और स्वयं को ईश्वर निश्चय करने वालों का तथा ऋद्धि-सिद्धि पर अभिमान करने वालों का ही सर्वनाश होता है, तथापि आश्चर्य है कि भारतवासी प्रतिवर्ष होलि तो जलाते हैं किन्तु न परमात्मा को जानते है, न मानते है और न ही उसकी शरण लेते हैं। बल्कि, कई तो स्वयं को ईश्वर (शिव) निश्चय करने की धृष्टता भी करते है।

गीता के भगवान ने कब और किस रूप में गोप-गोपियों के साथ होली मनाई थी ?

आज भारतवासी समझते हैं कि गीता के भगवान श्रीकृष्ण थे और कि उन्होंने द्वापर युग में गोप-गोपियों के साथ शिव ने १०८ गोप-गोपियों के साथ चरित्र किए (होली भी खेली थी), इसकी याद में आज भी १०८ की वैजन्तिमाला पूजित है, जिसमें 'फूल' ज्योतिर्लिंगम् शिव का, युगल दाना ब्रह्मा-सरस्वती का और १०८ मणि के गोप- गोपियों के प्रतीक हैं। परन्तु आज भारतवासी इन रहस्यों की भूल गए हैं।

सच्ची होली मनाने की रीति

इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि फिर गीता ज्ञान से अपनी चोली रंगी जाय और ज्ञान केसरी ही से मंगल-मिलन किया जाय और स्वयं को परमपिता परमात्मा की सन्तान निश्चय कर ईश्वर की याद में रहने के पुरुषार्थ में जो बाधायें आयें उनको एक ही बल, एक ही भरोसे के आधार पर पार किया जाय।

अब, ईश्वरीय ज्ञान तो स्वयं ईश्वर ही देते हैं। उसकी धारणा करके सच्ची होली मनानी चाहिये। इस रीति होली मनाने व अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान और योग द्वारा पवित्र बनने से ही, ५००० वर्ष पूर्व के गोप-गोपियों के समान अतीन्द्रिय सुख प्राप्त हो सकेगा। अत: होली इस ईश्वरीय आशा की याद दिलाती है कि होली अर्थात् पवित्र बनिए।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com